RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय संगीत मे मीडिया का योगदान

शिल्पा

असिस्टेंट प्रोफेसर, (संगीत गायन) खालसा कॉलेज फॉर वूमेन, सिविल लाइन्स, लुधियाना

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
घराना परम्परा संगीत कला

ABSTRACT
किसी भी देश की राजनैतिक परिस्थितियां उसकी संस्कृति को प्रभावित करती है। इसी प्रकार भारतीय संगीत भी वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक बहुत सारे पड़ावों या विभिन्न चरणों से गुजरता आया है। मुख्य रूप से अगर संगीत के विकास को देखा जाए, तो इस सदी को विज्ञान एवं तकनीक का युग कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हमारे भारतीय संगीत के प्रचार तथा प्रसार में मीडिया एक बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। मीडिया के माध्यम से हम किसी भी प्रकार के संगीत को किसी भी समय सुन सकते हैं। संगीत के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रभाव, प्रचार तथा प्रसार, मुद्रण प्रणाली की सुविधा, अनेक वैज्ञानिक उपकरण आदि के मेल से संगीत की शिक्षा, प्रदर्शन आदि सब कुछ प्रभावित हो रहा है।

भूमिका

आधुनिक काल में मीडिया शब्द का प्रयोग बहुत हो रहा है। जीवन के हर पहलू की जब बात चलती है, तो मीडिया की बात भी चलती है। मीडिया की उत्पत्ति के चिन्ह तो ब्रिटिश काल में ही प्राप्त हो जाते हैं परन्तु उसका पूर्ण विकसित रूप हमें भारत की स्वाधीनता उपरान्त ही दृष्टिगत होता है। अतः हम कह सकते हैं कि स्वाधीनता के बाद का काल में भारत ने मीडिया के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया बल्कि इसकों लाखों लोगों तक पहुँचाने में भी बड़ा सहयोग दिया। मीडिया के माध्यम से ही जनता संगीतकारों के सम्पर्क में आने लगी। आधुनिक समय में मीडिया एक वरदान सिद्ध हुआ है, जिसने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है।

मीडिया को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. मुद्रित माध्यम (Print Media)
2. इलैक्ट्रॉनिक माध्यम (Electronic Medi) के दो भाग है-(1) Only Listening (2) Listening and Watching

मुद्रित माध्यम (Print Media) :

इस माध्यम का इतिहास मुद्रण प्रणाली के आगमन (जन्म) से आरम्भ हुआ है। मुद्रण के आविष्कार ने सन्देशों को कई मनुष्यों तक पहुँचाने का मार्ग खोल दिया। यह जन संचार के माध्यमों में एक अत्यन्त प्रभावशाली माध्यम है, जिसमें मुख्य रूप से मुद्रित सामग्री का समावेश किया जाता है। पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आद मुद्रित सामग्री के अंतर्गत आते हैं।

प्रथम भारतीय प्रैस

भारत में सबसे पहली प्रैस पुर्तगालियों द्वारा धार्मिक सामग्री के प्रचार–प्रसार के लिए 1550 ई. में गोआ में स्थापित की गई थी। गोआ में प्रैस की स्थापना का उद्देष्य ईसाई विचारों का आदान–प्रदान करना था। परन्तु विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर जी ने पुस्तकों के मुद्रण के लिए 'संगीत प्रिंटिंग प्रैस' नामक मुद्रणालय स्थापित किया।

प्रिंटिंग प्रेस का आरम्भ इलैक्ट्रॉनिक के प्रभाव से ही हुआ। प्रिंटिंग कला का आरम्भ 16वीं शताब्दी में भले ही पुर्तगालियों द्वारा हुआ था परन्तु इसने विकसित रूप ब्रिटिष काल में ही प्राप्त किया।

मुद्रण प्रणाली के साथ विभिन्न भाषाओं में संगीत की पुस्तकों का मुद्रण

1000 वर्ष ईसा पूर्व तक संगीत के साथ संबंधित पांडुलिपियां संस्कृत भाषा में प्राप्त होती रही है जबकि मध्यकाल में कुछ पांडुलिपियां संस्कृत में तथा कुछ मुस्लिम प्रभाव के कारण फारसी भाषा में प्राप्त होती है। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक कालों में कुछ पुस्तकें उर्दू में भी लिखी गई, जैसे–नगमाते आसफ़ी, मदन–उल–मौसिकी।

एक अन्य महत्वपूर्ण उर्दू पुस्तक विनोद ग्रन्थ 1300 में दिल्ली में प्रकाशित हुई, जिसके लेखक गोसाईं चुन्नी लाल थे। इसके अलावा बाबेक दर्पण, मौसिकी–ए–हिन्द, लफसिल–ए–मौसिकी उल्लेखनीय है।

विभिन्न ग्रन्थों का प्रकाषन

उत्तर भारत के अंतर्गत पश्चिमी भारत में जयपुर के नरेष महाराजा प्रताप सिंह की प्रेरणा से संगीत विद्वानों का एक सम्मेलन हुआ और विद्वानों की चर्चा के फलस्वरूप संगीत सार ग्रन्थ की रचना हुई। इस ग्रन्थ में संगीत रत्नाकर, संगीत दर्पण, राग माला, अनूप विलास तथा संगीत पारिजात आदि कई प्रामाणिक ग्रन्थों का उल्लेख है। एस. एम. टैगोर ने संगीत की कई पुस्तकें लिखी। The Universal History of Music नामक ग्रन्थ बहुत प्रचलित हुआ। इसके अलावा उन्होंने कंठ कौमुदी, संगीत

सार, Hindu Musical 6 राग और 36 रागिनियों की रचना की।

स्वरलिपि पद्धति का जन्म और विकास

इसका आविष्कार मूल रूप से गीत सूत्रधार के लेखक कृष्णधन बैनर्जी ने किया। 1910 ई. के लगभग पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर ने तीन-रेखा प्रणाली का निर्माण किया। परन्तु यह स्वरलिपि कठिन होने के कारण अप्रचलित रही। पं. भातखण्डे जी ने सरल स्वरलिपि का अध्ययन किया, जो कि आज भी प्रचार में है। स्वरलिपि ने संगीत को लिपिबद्ध रूप में सुरक्षित रखने की क्रिया में बहुत सहायता प्रदान की। हमारे पास लिखित रूप में सिर्फ यही एक माध्यम है, इसके द्वारा हम अपनी परम्परा को अपनी पीढ़ी के हाथों में सौंप सकते है। स्वरलिपि पद्धति में हमें रागों के स्वरूप, उसके लक्षण विलक्षण, स्वरों की बनावट, ताल, मात्राओं और खाली, ताली संबंधी ज्ञान प्राप्त होता है।

पं. भातखण्डे जी और पं. विष्णु दिगंबर प्लुस्कर जी के प्रयत्न द्वारा शास्त्रीय संगीत संबंधी सामग्री का प्रकाशन

भातखण्डे जी के ग्रन्थों के सृजनकाल का आरम्भ 1909-10 ई. माना जाता है। उन्होंने सर्वप्रथम 'श्री मल्लक्षयम् संगीतम्' नामक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा और 'चतुर' उपनाम से इसको प्रकाशित किया। 1910 में 'हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति' नामक ग्रन्थ अपने निजी नाम 'विष्णु शर्मा' के नाम से प्रकाशित कराया। रागों को दस थाटों में विभाजित करते हुए रागों के प्रत्यक्ष उदाहरण देकर उसके स्वरूप तथा चलन भेद स्पष्ट करने वाली तालबद्ध सरगमों का संग्रह स्वर मालिका नामक पुस्तक में किया। इन्होंने A Short Historical Survey of Music of Upper India क्रमिक पुस्तक मालिका, राग दर्पण, बाणभट्ट द्वारा रचित ग्रन्थ अनूप संगीत रत्नाकर और लक्षण, गीत संग्रह, गीतमालिका भावी संगीतम, ग्रन्थ संगीतम आदि पुस्तकों का प्रकाशन भी कराया।

पं0 विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर जी ने संगीत के विषय में लगभग 250 पुस्तकें लिखकर क्रमबद्ध तथा प्रमाणभूत संगीत साहित्य का निर्माण किया। उनकी कुछ पुस्तकों के नाम-संगीत बाल बोध, संगीत बाल प्रकाश भाग 1-3, संगीत ताव दर्शन, राग प्रवेश, भारतीय संगीत लेखन पद्धति, टप्पा गायन, अंकित अलंकार, मृदंग-तबला वादन पद्धति इत्यादि। इसके अतिरिक्त 'संगीत शिक्षक', 'राष्ट्रीय संगीत', 'महिला संगीत' आदि पुस्तकें भी लिखी।

संगीत पत्रिकाओं का योगदान

भारत में सबसे पहली संगीत पत्रिका Annual Report of the Bengali Music School रसमंजरी संगीत कला विहार के नाम पर 1871 में निकली। इसके बाद Oriental Music के नाम से भारतीय संगीत को समर्पित एक और पत्रिका निकली, जो केवल 2 वर्ष तक ही चल सकी। भारत की सबसे प्राचीन संगीत को समर्पित पत्रिकाएं–भारतीय, Oriental Music in Staft Notation, संगीताश्रित सुबद्ध संगीत प्रबद्ध लक्ष्य संगीत आदि। इस प्रकार संगीत की बहुत सी पत्रिकाएं है, जिनका प्रकाशन किसी कारणवश बंद हो चुका है।

इन पत्रिकाओं में संगीत कला से संबंधित महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। ये पत्रिकाएं शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक पथ अथवा प्रचार के साथ ही उसके शास्त्रीय पहलुओं को उजागर करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन पत्रिकाओं में समय-समय पर विभिन्न कलाकार, उनके घरानों, गायन-वादन शैलियों तथा संगीत के विभिन्न विषयों पर संबंधित लेख छपते रहते हैं।

समाचार पत्र

प्रैस जनसंचार का एक प्रमुख माध्यम है। आधुनिक काल में समाचार पत्र जीवन का एक प्रमुख अंग बन चुका है। समाचार पत्र आज संगीत के प्रचार-प्रसार का एक सरल माध्यम है, जिससे देश विदेश के संगीत से संबंधित जानकारी मिलती रहती है। आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूप-रेखा, स्थान और तिथि समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलती है। जिन कलाकारों द्वारा प्रोग्राम प्रस्तुत किए जाते हैं, उनके मंच प्रदर्शन, विशेषताएं भी समाचार पत्रों में छपती है, वर्तमान समय में The Hindustan Times, The Times of India, Indian Express आदि समाचार पत्रों में संगीत विषयों के बारे में जानकारी तथा सांगीतिक राज्यभ्रमों की भी सूची मिलती है।

पैम्फलेट और स्मारिका

पैम्फलेट एक स्वतन्त्र प्रकाशन है। इसमें मुद्रित सामग्री को कुछ ही पन्नों में एकत्रित किया जाता है। यह पन्ने आपस में जुड़े हुए होते हैं। परन्तु इनको जिल्द में नहीं बांधा जाता। इनको कुछ विशेष समागमों अथवा समारोहों, सम्मेलनों तथा सभाओं में बांटा जाता है। कभी-कभी यह किसी संगीतकार अथवा विभूति की स्मृति में होते हैं तथा किसी संस्था की रजत जयंती और स्वर्ण जयंती होने पर कार्यक्रम संबंधी सूचना तथा संस्थान के प्रमुख क्रियाकलापों के विषय बताने के लिए होते हैं।

डिस्कोग्राफी

संगीत के शास्त्रीय और उपशास्त्रीय (भजन फिल्मी संगीत) प्रकारों के रिकॉर्ड्स की जब सूची बनाई जाती है, तो उनको डिस्कोग्राफी कहते हैं। कुछ डिस्कोग्राफी के नाम

A Catalogue of Classical and Traditional Indian Music

टेप रिकॉर्डिंग्स कैटलॉग (संगीत नाटक एकेडमी), नई दिल्ली

डाकटिकटों में संगीत

डाक टिकट किसी राष्ट्र की श्रेष्ठ परम्पराओं और प्रकृति के दर्शन करने का प्रमुख माध्यम है। इसके माध्यम से राष्ट्रिय जीवन के हर एक पहलू, कला, व्यापार, इतिहास, दस्तकारी और प्रकृति आदि की झलक प्राप्त की जा सकती है। भारत के डाक विभाग द्वारा शास्त्रीय संगीत के कलाकारों, संगीतकारों के स्मारक डाकटिकट जारी करके इनको सम्मिलित किया गया। जैसे-पं.विष्णु नारायण भातखण्डे,

विष्णु दिगम्बर पुलुस्कर, त्यागराज, पूरन दास और भगत व्यक्तियों में कबीर, तुलसीदास, मीरा, सूरदास, नरसिंह मेहता, संत नामदेव, संत रविदास इत्यादि।

इसके अंतर्गत संगीत से संबंधित कुछ अन्य डाकटिकट आकाशवाणी की रजत जयंती 8 जून 1961 को जारी हुए। आकाशवाणी का डाकटिकट, काशी विद्यापीठ के स्वर्ण जयंती पर जारी किया गया जिस पर काशी विद्यापीठ का चित्र अंकित किया गया है।

पोस्ट कार्ड में संगीत से संबंधित जानकारी

पोस्टकार्ड एक प्रकार की मुद्रित सामग्री है, जो किसी देश तथा राज्य की संस्कृति, दर्शनीय स्थलों तथा जलवायु आदि को दर्शाती है। हमारे देश की हवाई कम्पनी भी इस कार्य में पीछे नहीं है। 'एअर इंडिया' ने शास्त्रीय संगीत के पोस्ट कार्ड मुद्रित करके शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। प्रथम पोस्टकार्ड में महाराज को वीणा पर राग मालकौंस बजाते हुए दिखाया गया है। रात का राग होने के कारण चित्र की पृष्ठभूमि में काले रंग का प्रयोग किया गया है। राजा की कल्पना में उनकी रानी को दिखाया गया है।

दूसरे पोस्टकार्ड में महाराजा को बांसुरी पर बसन्त राग बजाते हुए चित्रित किया गया है, साथ ही बांसुरी पर कोयल को भी चित्रित किया गया है।

तीसरे पोस्टकार्ड में महाराजा को तानपूरा लिए हुए दीपक राग का गायन करते हुए दर्शाया गया है। पृष्ठभूमि में लाल रंग और अग्नि की लपटों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रत्येक कार्ड के पीछे उस राग का नाम, प्रकृति तथा गायन-वादन के समय का उल्लेख किया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media)

संगीत के इतिहास में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रदर्शन एक प्रकार से क्रान्तिकारी घटना के रूप में सिद्ध हुआ है। भले ही वह रेडियो, टीवी, वीसीडी, कैसेट, रिकार्ड प्लेयर आदि ही क्यों न हो। कणों को गति द्वारा संचालित माध्यमों को संचार क्रिया में प्रयुक्त किए जाने को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहते हैं। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में इनको दो भागों में बांटा जाता है-

क. श्रव्य माध्यम
ख. दृश्य श्रव्य माध्यम

क. श्रव्य माध्यम - श्रुति शब्द ध्वनि से संबधित है। जिस माध्यम द्वारा केवल ध्वनि प्रसारित की जा सके, श्रुति माध्यम कहलाता है। जैसे आकाशवाणी, ग्रामोफोन, ध्वनि पटिकाएँ, टेप रिकार्डर आदि।

ख. दृश्य-श्रव्य माध्यम - दृश्य श्रव्य माध्यम वह होते है जिनको देखकर और सुनकर ग्रहण किया जा सके। जैसे-दूरदर्शन, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि। इसके अलावा रिकॉर्डिंग के साथ संबंधित उपकरण जैसे-वी.सी.पी. वी.सी.आर., वी.सी.डी. आदि।

इलेक्ट्रॉनिक यन्त्र (ग्रामोफोन)

अमेरिका निवासी थॉमस एडीसन ने सन् 1877 में ग्रामोफोन का आविष्कार किया। इसके माध्यम से शास्त्रीय संगीत के प्रसार-प्रचार आरंभ हुआ और संगीत को सुरक्षित करना सम्भव हो पाया है क्योंकि प्राचीन समय में संगीत में क्रियात्मक स्वरूप को करते हुए इसका कोई भी साधन, उपकरण, अपना माध्यम उपलब्ध नहीं था। सन् 1907 ई0 में इंग्लैंड में ग्रामोफोन कम्पनी ने ग्रामोफोन रिकॉर्ड बनाने का एक कारखाना डगमग, कोलकाता में स्थापित किया। इससे स्पष्ट होता है कि भारत में ग्रामोफोन रिकॉर्ड सन् 1907 में बनने आरम्भ हुए।

रिकॉर्डिंग पद्धति से संबंधित वैज्ञानिक उपकरण और इससे कलाकारों और विद्यार्थियों को लाभ

20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ही कलाकारों के रिकॉर्ड बनने आरम्भ हो गए थे किन्तु इसमें रिकॉर्डिंग की अधिक गुणवत्ता उपलब्ध नहीं थी। परन्तु उत्तरार्ध काल में रिकॉर्डिंग पद्धति पर नए-नए प्रयोग हुए तथा बेहतर रिकॉर्डिंग पद्धति विकसित होने लगी। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ग्रामोफोन रिकॉर्ड के माध्यम से संगीत जगत में क्रान्ति आ गई। ग्रामोफोन के साथ-साथ टेप रिकॉर्डर तथा रिकॉर्ड प्लेयर भी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में छा गए। टेप रिकॉर्डर के साथ संगीत जगत में कैसेट युग का आगमन हुआ। कैसेटों से कलाकारों और श्रोताओं को आसानी हो गई क्योंकि ये किसी भी समय, कहीं भी आसानी से लाया ले लाया जा सकती थी और रिकॉर्डिंग की जा सकती थी।

टेप रिकॉर्डर

आरम्भ में टेप चरखी के रूप में होती थी। मशीनों द्वारा टेपों का प्रयोग भी किसी प्रकार के धागे की सहायता से आगे-पीछे खींच कर किया जाता था। यह एक रील की तरह होती थी। इस कमी को दूर करने के लिए कैसेटों का निर्माण हुआ। इस उपकरण की विशेषता यह है कि कलाकार अपने कार्यक्रम को रिकॉर्ड करके और उसको सुनकर, उसका मूल्यांकन करके अपनी कमियों को दूर करने में सफल हुए। आज कुछ उच्च कोटि के विद्वान कलाकर जो हमारे मध्य आज नहीं है, वह इस उपकरण के माध्यम से हमारे बीच जीवित हैं।

ध्वनि पटिकाएं (Cassettes and CDs)

संगीत के प्रचार और प्रसार में ऑडियो कैसेट्स और सीडीज़ का भी महत्वपूर्ण स्थान है। कैसेट्स और सीडीज़ ऐसे साधन है जो लोगों के मनोरंजन का साधन भी बनते हैं और आम जनता इनको खरीद भी सकती है, क्योंकि इनकी कीमत भी अधिक नहीं होती। कैसेट्स को कैसेट प्लेयर और सीडीज़ को सीडी प्लेयर में लगाकर सुना जा सकता है। कैसेट, सीडी में संगीत को रिकॉर्ड करके संभाला जा सकता है। कैसेट का दौर बहुत पुराना है, इसलिए पुरानी कैसेट में पुराने उस्ताद लोगों का संगीत सुनने को मिलता है। आजकल शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्मी संगीत, गुरुमति संगीत आदि की भिन्न-भिन्न प्रचलित श्रेणियों की रिकॉर्डिंग मिल जाती है। इन साधनों द्वारा लोग घर बैठे ही संगीत का आनन्द ले सकते हैं।

कॉम्पैक्ट डिस्क

आधुनिक युग में कॉम्पैक्ट डिस्क का विशेष स्थान है। कॉम्पैक्ट डिस्क में सारा कार्य एक छोटे से कम्प्यूटर और लेज़र किरणों द्वारा होता है। इस प्रकार कॉम्पैक्ट डिस्क की सहायता से केवल संगीत का व्यवहारिक पथ ही प्रभावित नहीं हुआ बल्कि शास्त्रीय पथ पर भी बहुत प्रभाव पड़ा है। रिकॉर्ड प्लेयर की तुलना में यह तकनीक बहुत अधिक विकसित है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इसको अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। एक कॉम्पैक्ट डिस्क में 45 मिनट का एक राग सरलता से सुना जा सकता है।

माइक तथा साऊंड प्रूफ भवनों द्वारा संगीत रिकॉर्डिंग

इस प्रकार की संगीत रिकॉर्डिंग के लिए माइक व्यवस्था, परिवर्तन, अनुवाद और प्रतिध्वनि आदि के नियमों को ध्यान में रखकर विशेष भवनों तथा सभागृहों का निर्माण किया जाता है। जिसमें हॉल की दीवारों को सेलोटिक्स आदि जैसी नर्म परतों से मढ़ा जाता था जिससे ध्वनि के परिवर्तन में आवश्यकता से अधिक गूंज न हो। यहाँ तक भवन का फर्श भी चादर से ढका जाता है। अगर भवन में कुर्सियों की व्यवस्था है तो उनको भी गद्दी आदि के साथ ढककर बैठा जाता है, ताकि रिकॉर्डिंग के समय किसी प्रकार की आवाज़ न हो सके।

लाउड स्पीकर का व्यापक योगदान

ध्वनि विस्तारक यंत्र में माइक्रोफोन, ऑडियो फायर के रूप में बहुत विकसित हुआ। अब उसका प्रचार प्रत्येक संगीत सभा में होने से काफी अधिक हो गया तथा यह कलाकार की सफलता-असफलता का साधन माना जाने लगा। कुछ संगीतकार गाते तो अच्छा है, परन्तु आवाज़ पतली तथा हल्की होने के कारण महफिलों तथा सम्मेलनों में असफल हो जाते हैं। उनके लिए आज सफलता के द्वार खुल गए हैं। इस प्रकार माइक्रोफोन तथा लाउडस्पीकर आदि उपकरणों के उपयोग से हज़ारों श्रोताओं को एक ही स्थान तथा एक ही समय में संगीत का आनन्द प्राप्त करना आसान हो गया।

अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक यंत्र

वीडियो, वी.सी.आर.-वीडियो कैसेट तथा वी.सी.आर द्वारा रिकॉर्ड किए गए कार्यक्रम को टेलीविज़न पर देखा तथा सुना जा सकता है।

रेडियो-टीवी की तरह रेडियो भी मीडिया का एक पुराना प्रचार-प्रसार का माध्यम है। रेडियो पर संगीत कार्यक्रम जैसे विविध भारती, संगीत सरिता का कार्यक्रम और कलाकारों की जानकारी प्राप्त होती है। उनको साक्षात्कार (इंटरव्यू) सुनने को मिलता है। आज भी रेडियो पर प्रसिद्ध कलाकारों के राग, सुगम संगीत, गज़लें आदि सुनने को मिलती है।

टीवी-टीवी में समाचार प्रसारित होते हैं और इन समाचारों में संगीत के संबंध में, यदि भारतीय संगीत का कोई सम्मेलन होता है तो उसकी खबर घर बैठे लोगों को दी जा सकती है। टीवी पर कई बार संगीत सम्मेलन का सीधा प्रसारण भी किया जाता है जैसे हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन का सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर किया जाता है। जिससे संगीत सीखने वालों को तो लाभ होता ही है बल्कि आम लोगों को भी संगीत प्रोग्राम देखने तथा सुनने को मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त सभी चैनलों में से शायद ही कोई ऐसा कार्यक्रम होगा जो संगीत के बिना हो। दूसरे कार्यक्रमों के अलावा संगीत के विशेष कार्यक्रम भी होते हैं। इसी श्रेणी में दिल्ली दूरदर्शन पर 'सुबह सवेरे' कार्यक्रम तथा 'मेरी आवाज़ सुनो' संगीत कार्यक्रम प्रतियोगिता थी। ज़ी टीवी पर सा रे गा मा पा और सब टीवी पर 'आओ झूमें गाएं' फिल्मी शास्त्रीय संगीत पर आधारित रहा।

दूरदर्शन-दूरदर्शन लगभग 44 वर्षों से कला और संस्कृति को आगे बढ़ा रहा है। वैज्ञानिक उपकरणों की लड़ी में जहाँ तक दूरदर्शन की बात है, यह एक ऐसी देन है, जिससे मनुष्य की वर्षों से सजाई हुई कल्पना को साकार किया है। विश्व की हर गतिविधि को जनता तक पहुंचाने के लिए दूरदर्शन की अहम भूमिका रही है।

दूरदर्शन पर समय-समय पर संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम आयोजित होता है। जिस पर देश के महान कलाकार गायन-वादन और नृत्य की प्रस्तुति देते हैं। जिसमें उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ (शहनाई वादक), पं. जसराज जी (गायक), उस्ताद ज़ाकिर हुसैन (तबला वादक) आदि अनेक कलाकारों के जीवन तथा शैलीगत विशेषताओं को दर्शाया जाता है।

स्वर पेटी-इसको बिजली की सहायता से बजाया जाता है। यह तानपूरे का स्थान ग्रहण करने में समर्थ है, परन्तु तानपूरे की भांति तारों की झनकार से मिठास उत्पन्न नहीं कर सकता।

इलैक्ट्रॉनिक तालमाला-इसमें लगभग 35 ताल कर्नाटक के तथा कुछ हिन्दुस्तानी संगीत के भी ताल विद्यमान होते हैं। इसमें विभिन्न तालों को अपनी आवश्यकता अनुसार अति विलंबित, विलंबित, मध्य तथा द्रुत लय में स्थिर किया जा सकता है।

आकाशवाणी-शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में आकाशवाणी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आकाशवाणी ने राष्ट्रिय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तर पर योगदान दिया है। आकाशवाणी द्वारा संचालित प्रसिद्ध गायक और वादकों के गायन तथा वादन को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई है।

यह आकाशवाणी 20वीं शताब्दी की देन है। इसके आरम्भिक आविष्कारक सर जे.सी. बोस थे। 21 दिसम्बर 1920 को विश्व का सर्वप्रथम नियमित प्रसारण केंद्र स्थापित हुआ। आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में संगीत को विशिष्ट स्थान देने का सेहरा स्व. डॉ. वी.सी.केसकर को दिया जाना चाहिए, जिन्होंने 1952 के मन्त्रीकाल में संगीत प्रसारण संबंधी चेतनशील नीति बनाई।

आकाशवाणी के विभिन्न शास्त्रीय संगीत संबंधी कार्यक्रम-शास्त्रीय संगीत प्रसारण में आकाशवाणी का विशेष महत्व रहा है। श्री जी. जी. अवस्थी के अनुसार 1952 में डॉ. वी.सी.केसकर के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का मंत्री पद ग्रहण करने पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों की विभिन्न रूपरेखाएं बनी।

शास्त्रीय संगीत के विभिन्न कार्यक्रम-

1. शास्त्रीय संगीत का नियमित प्रसारण
2. शास्त्रीय संगीत का राष्ट्रिय कार्यक्रम
3. संगीत पत्रिका
4. महफिल
5. आकाशवाणी संगीत सम्मेलन
6. संगीत पाठ
7. विविध भारती

8. राष्ट्रिय वृन्द
9. एफ.एम. इत्यादि

सिनेमा

सिनेमा शब्द हमारे जनजीवन में इतना घुलमिल गया है कि इस शब्द का परिभाषित करना अत्यन्त कठिन है। भरत के अनुसार गायन, नाट्य की सेज है। फिल्में जनसंचार का एक सरल माध्यम है।

भारत में सिनेमा उद्योग का आरम्भ 1912-1913 में हुआ। सबसे पहले मूक चित्रपट बनते थे। सन् 1913 ई0 में प्रथम बोलती फिल्म 'आलम आरा' का निर्माण हुआ। उस समय की फिल्मों में अधिकतर गीत रागों पर आधारित होते थे, जिससे समाज में शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार हुआ। शास्त्रीय संगीत के कलाकारों ने, फिल्मों में प्लेबैक सिंगर के रूप में कार्य किया तथा रागों का गायन किया जैसे कि पं.डी.वी. प्लुस्कर, अमीर खाँ, पं.भीमसेन जोशी, बेगम परवीन सुलताना, पं. राजन, साजन मिश्रा जी इत्यादि।

डी.डी. भारती पर शास्त्रीय संगीत

डी.डी. भारती आरम्भ किए जाने का कारण कला, संस्कृति, स्वास्थ्य तथा बच्चों के कार्यक्रमों में वृद्धि करना था। संगीत की विभिन्न धाराओं शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा सुगम संगीत तीनों को ही भारती अपने कार्यक्रमों में स्थान देता है। इन कार्यक्रमों के नाम है-सुरशांति, भक्ति संगीत, राग रिदम, संगीत समय, कला तरंग, कला परिक्रमा इत्यादि।

कम्प्यूटर, लैपटॉप, इंटरनेट

विज्ञान की नई-नई उपलब्धियों में कम्प्यूटर का एक विशेष स्थान है। आजकल सभी विषयों पर खोज करने वाले विद्यार्थी भी संकलित सामग्री का विश्लेषण करने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं। कम्प्यूटर द्वारा संगीत जगत को संगीत के विकास में बहुत लाभ हुआ। कम्प्यूटर की सहायता से संगीत की धुनों तथा नए रागों की रचना भी की जा सकती है। कम्प्यूटर की स्टोरेज मेमोरी पॉवर द्वारा दुनिया की हर रिकॉर्डेड चीज़ संकलित करके रखी जा सकती है।

इंटरनेट दुनिया के अलग-अलग स्थानों में स्थापित कम्प्यूटर नेटवर्क को टेलीफोन लाइन की सहायता से जोड़कर एक अंतर्राष्ट्रीय सूचना मार्ग है। जिस पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचना पलक झपकते ही पहुँच सकती है। इंटरनेट द्वारा पूरी दुनिया की जानकारी प्राप्त हो सकती है। पुरानी रिकार्डिंग्स, कलाकारों का परिचय, उनकी गायन-वादन शैली आज इंटरनेट पर उपलब्ध है। इंटरनेट में कलाकारों की वेबसाइट्स हैं जिन पर सर्च करके हम उन कलाकारों की वीडियो तथा संगीत समारोह देख सकते हैं। इंटरनेट द्वारा संगीत के सॉफ्टवेयर भी तैयार किए जाते हैं जिनसे नंगीत प्रेमी संगीत से संबंधित कुछ भी डाउनलोड कर सकते हैं। आज तो इतनी सुविधा हो गई है कि संगीत की किताबें, पत्रिकाएं, अखबार इत्यादि भी हम इंटरनेट द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ल्ड वाइड वेब (World Wide Web)

इसमें किसी भी वेबसाइट को खोलने के लिए www.site name.com टाईप करके सूचना प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट को यदि हम एक पुस्तक माने, जिसमें विष्वभर की सभी सूचनाएं तथा जानकारी है, तो वेबसाइट इसका एक अध्याय है। इसके माध्यम से विष्व के किसी भी कोने से, किसी भी विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कुछ संगीत की वेबसाइट्स

www.lyrics.com
www.classicalmusic.com
www.indianmusic.com

ई-कॉमर्स

ई-कॉमर्स की किसी वेबसाइट को खोलकर उसको अपना आर्डर क्रेडिट कार्ड द्वारा देकर अपनी मनपसंद चीज़ प्राप्त कर सकते हैं। इसकी सहायता से देश-विदेश में कहीं से भी संगीत से संबंधित वाद्य जैसे वीणा, सितार, तानपूरा, सारंगी, तबला, हारमोनियम व वाद्यों की तारें, संगीत संबंधी पुस्तकें, कैसेट्स, सीडीज़ खरीदना अब आसान हो गया है।

इलेक्ट्रॉनिक मेल

ई मेल संदेश भेजने का अति आधुनिक तेज़ तथा सस्ता साधन है। इस प्रणाली से संगीत संबंधी सामग्री प्रकाशन संस्थानों, शिक्षण संस्थानों को ईमेल की जा सकती है।

टेली टैक्स्ट

टेली टैक्स्ट प्रणाली द्वारा संगीत से संबंधित सामग्री, कोई सूचना, कार्यक्रमों की सूची, शास्त्रीय गायन, वादन तथा नृत्य से संबंधित कार्यक्रम सूचना कब, कहाँ और किस कलाकार द्वारा प्रस्तुत किया जा रही है। इस संबंधी सूचना तथा कार्यक्रम की जानकारी प्रस्तुत की जा सकती है।

वीडियो टैक्स्ट

यह भी टेली टैक्स्ट की तरह ही है। शास्त्रीय संगीत से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। जैसे शास्त्रीय संगीत के कौन से वाद्य बाजार में उपलब्ध है।

टेली कांफ्रेंस

इसका अर्थ है-दूरदर्शन साधनों द्वारा दो या दो से अधिक स्थानों पर तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों का आपस में विचार विमर्श करना। यह तीन प्रकार की होती है-

1. ऑडियो कान्फ्रेंस
2. वीडियो कान्फ्रेंस
3. कम्प्यूटर कान्फ्रेंस

ऑडियो कांफ्रेंस में व्यक्ति बात करते हुए एक दूसरे को देख नहीं सकते जबकि वीडियो कान्फ्रेंस में देख भी सकते हैं। कम्प्यूटर कान्फ्रेंस में अलग-अलग स्थानों पर बैठे व्यक्ति सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार गुरु शिष्य का एक ही शहर या देश में स्थित होना भी जरूरी नहीं है।

साइबर शिक्षा

आज इंटरनेट युक्त कम्प्यूटर की सहायता से विश्व की सर्वोत्तम शिक्षा तथा जानकारी घर बैठे ही प्राप्त की जा सकती है। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी इसके बहुत लाभ है। इस प्रकार साधारण शब्दों में विद्यालय तथा विश्वविद्यालय की शिक्षा घर बैठे ही प्राप्त करना ही साइबर शिक्षा है।

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें

यदि इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन की लोकप्रियता बढ़ी तथा आर्थिक दृष्टि से भी ठीक रही तो जल्दी ही इलेक्ट्रॉनिक बुक स्टोर महानगरों, शहरों तथा कस्बों में खुलने लगेंगे। इस से पुस्तकें प्राप्त करना सरल हो जाएगा।

मोबाइल फोन

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में मोबाइल फोन भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कम्प्यूटर की तरह इसमें भी स्टोरेज की सुविधा है। मोबाइल फोन में 215 एमबी से लेकर 4.0 जीबी तक के कार्ड भी पाए जाते हैं जिसमें बहुत कुछ सेव किया जा सकता है। संगीत प्रेमी मोबाइल फोन में संगीत कलाकारों द्वारा पेश किए गए संगीत समारोह को सुनते रहते हैं तथा मोबाइल फोन में ब्लूटूथ की भी सुविधा होती है, जिससे हम एक दूसरे को संगीत की फाइल्स आदान-प्रदान कर सकते हैं।

उपसंहार

इस प्रकार हम अंत में कह सकते हैं कि मीडिया के माध्यम से शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्मी संगीत इत्यादि के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा हाथ है। इन सभी माध्यमों की सहायता से ही संगीत आगे बढ़ सफलता की ऊँचाईयों को छू चुका है तथा और आगे भी बढ़ रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति मीडिया के माध्यम से गायन, नृत्य तथा वादन तीनों संगीत के प्रकारों से रू-ब-रू हो सकता है। जिससे प्रत्येक कलाकार अपनी कला में और भी इज़ाफा कर पाया है और आज के वैज्ञानिक युग में मीडिया संगीत क्षेत्र में महत्व रखती है, जिनके चलते कला के प्रदर्शन एवं कला निर्माण तथा प्रसार में सहायता मिलती है।

संदर्भ

पुस्तक सूची

1. डॉ. चंद्र प्रकाश मिश्र मीडिया लेखन, संजय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2003
2. डॉ. स्मिता मिश्र भारतीय मीडिया, अंतरंग पहचान, भारत पुस्तक भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002
3. पं. किरण देशपाण्डे संगीत कला विहार, पृष्ठ नं0 40
4. अनीता गौतम भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, पृष्ठ नं0 27
5. प्रो. देव चौधरी ऑन इण्डियन म्यूज़िक, पृष्ठ नं0 12
6. B.Kuppuswamy Communication and Delelopment in Indian Music